मणिपुर की लोक कथाएं



डा. जगमल सिंह

मणिपुर की लोक कथाएं

डा. जगमल सिंह

प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार

प्रथम संस्करण : चैत्र 1911 (मार्च 1990)
पुनर्मुद्रण : श्रावण 1913 (अगस्त 1991)

© प्रकाशन विभाग

मूल्य : 10 रुपये

निदेशक, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, पटियाला हाउस, नई दिल्ली-110001 द्वारा प्रकाशित।

विक्रय केन्द्र • प्रकाशन विभाग

- सुपर बाजार (दूसरी मंजिल), कनाट सर्कस, नई दिल्ली-110001
- कामर्स हाउस, करीमभाई रोड, बालार्ड पायर, बम्बई-400038
- 8, एस्प्लेनेड ईस्ट, कलकत्ता-700069
- एल० एल० ए० आडीटोरियम, 736 अन्नासलै, मद्रास-600002
- बिहार स्टेट को-ओपरेटिव बैंक बिल्डिंग, अशोक राजपथ, पटना-800004
- निकट गवर्नमेंट प्रेस, प्रेस रोड, त्रिवेन्द्रम-695001
- 10 बी, स्टेशन रोड, लखनऊ-226019
- राज्य पुरातत्वीय संग्रहालय बिल्डिंग, पब्लिक गार्डन्स, हैदराबाद-500004

एस. एस. ब्रजवासी एण्ड संस, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित

प्रकाशकीय

हमारे लोक जीवन में अनेक कथाएं बिखरी पड़ी हैं। इन कथाओं में जीवन के संचित अनुभवों को प्रतीकों के माध्यम से व्यक्त किया जाता है। हम किसी प्रसंग-विशेष से जुड़ी कोई कथा सुनाकर अपनी बात को सार्थक और प्रभावशाली बनाते हैं।

मानव-समाज में आदिकाल से ही लोक कथाएं प्रचलित हैं और अपनी व्यापकता और सार्थकता के आधार पर ये लोक जीवन में इतनी गहरी पैठ गई हैं कि ये जन-मानस का संस्कार बन चुकी हैं। इन कथाओं की रोचक प्रस्तुति इन्हें और अधिक जीवंत और प्राणवान बना देती है।

लोक कथाएं अब से कुछ समय पहले तक श्रुति-परम्परा में आती थीं और बच्चे अक्सर दादी-नानी के माध्यम से इन्हें सुनने के लिए मचलते रहे हैं। किंतु सामाजिक जीवन की बढ़ती व्यस्तताओं के कारण ये सम्पर्क और संवाद निरंतर शिथिल पड़ते जा रहे हैं। परिणाम यह हुआ है कि लोक कथाओं का प्रवाह भी अवरुद्ध हो चला है। इन परिस्थितियों में लोक कथाओं को संग्रहीत और प्रकाशित करने की आवश्यकता और प्रासंगिकता अनुभव की गई। इसीलिए लोक कथाओं के अनेक संग्रह सामने आए हैं।

प्रकाशन विभाग ने भी इस दिशा में काफी कार्य किया है। अपने पाठकों को रोचक, प्रेरक तथा शिक्षाप्रद लोक कथाएं उपलब्ध कराने के लिए विभाग ने भारत के विभिन्न प्रांतों की लोक कथाएं प्रकाशित की हैं। इसी क्रम में 'मणिपुर की लोक कथाएं' प्रस्तुत हैं। इसके लेखक हैं—डा. जगमल सिंह।

आशा है, ये लोक कथाएं पाठकों का मनोरंजन करेंगी और उन्हें प्रेरणा प्रदान करेंगी।

डा. श्याम सिंह शशि
निदेशक

दो शब्द

दो दशक के मणिपुर प्रवास में मेरी 'मेते' (घाटी निवासी जाति) और जन-जातीय लोक-जीवन में गहरी रुचि रही। लोक साहित्य में रुचि होने के कारण यह स्वाभाविक ही था। हिन्दी में मणिपुर से सम्बंधित सामग्री नगण्य है। हिन्दी पाठकों तक मणिपुर से सम्बंधित सामग्री पहुंचाना मैंने अपना कर्त्तव्य समझा। पत्र-पत्रिकाओं एवं प्रकाशकों के सहयोग से मैं अपने अभीष्ट की प्राप्ति में आंशिक सफलता प्राप्त कर सका। लोक साहित्य के अध्ययन के उद्देश्य से मैंने लोक कथाओं का संकलन भी किया। लोक कथाओं के अनेक रूपांतर और पाठ मिलते हैं। मौखिक साहित्य का यह प्रमुख गुण है। मणिपुरी लोक कथाएं इसकी अपवाद नहीं हो सकतीं। संकलित लोक कथाओं में से कुछ लोक कथाओं का मैंने यह संग्रह तैयार किया।

संकलन की लोक कथाओं से पाठकों को मणिपुर की प्रथा-परम्पराओं और जन-जीवन की एक झलक मिल सकेगी। आशा है इस सुदूर पूर्वांचल से हिन्दी भाषी पाठक भावात्मक तादात्म्य स्थापित कर सकेंगे। यही मेरे श्रम की सार्थकता होगी।

डा. श्याम सिंह शशि के प्रति मैं हृदय से आभारी हूं जिनके कारण पुस्तक का प्रकाशन सम्भव हो सका है। प्रकाशन विभाग साधुवाद का पात्र है जिसने शासकीय प्रकाशन क्षेत्र में यह पहल की है।

डा. जगमल सिंह

अनामिका, अरुण, मनीष,
कमल, पिन्टू, नीनू, मोनू
और सोनू को।

— डा. जगमल सिंह

अनुक्रम

आतिथ्य

मणिपुर के पश्चिम में काम्बीरेन नामक गांव में रोङमई कबीले के रुना और गुइलेङ नामक भाई-बहन रहते थे। रुना ग्यारह और गुइलेङ आठ साल की थी। दो साल पहले बीमारी से उनके मां-बाप मर गए। मां-बाप का प्यार तो उन्हें नहीं मिल सका मगर वे एक-दूसरे को बहुत चाहते थे। वे दोनों हर समय साथ रहते थे। गांव वाले लोग उन्हें बहुत चाहते थे क्योंकि वे सभी का आदर करते थे। कोई भी आदमी उन्हें काम बताता तो वे मना नहीं करते, इसलिए सभी उन्हें चाहते थे। कबुई नागा परम्परा के अनुसार गांव के सब लोग मिलकर उनके खेतों को जोतने-बोने से, फसल काटकर भंडार तक पहुंचाने तक का काम कर देते थे। दोनों बच्चे भी उनका हाथ बंटाते और काम सीखते थे।

उसी गांव में एक परिवार के सात भाई अपने माता-पिता के साथ रहते थे। वे जवान थे। सातों साहसी, बहादुर और मेहनती थे। मगर थे घमंडी। घमंड के मारे वे किसी से सीधे मुंह बात नहीं करते थे। उनका परिवार धनी था। वे सबको अपने से छोटा समझते थे, इसलिए लोग उनसे दूर रहते थे।

गांव के दक्षिण में एक नदी थी। जाड़े के दिनों में फसल बोने के बाद गांव वालों को कोई काम नहीं रहता था, इसलिए उन दिनों औरतें पूरे परिवार के लिए करघे पर कपड़े बुनतीं, मर्द जंगलों में लकड़ियां काटते और शिकार करते तो लड़के-लड़कियां नदी में मछली पकड़ते। सूरज निकलने से पहले सब भोजन करके अपने-अपने काम पर निकल पड़ते थे। रुना और गुइलेङ भी बड़े सवेरे उठते, भोजन करते और अपनी-अपनी लोंग (मछली पकड़ने की टोकरी) व तूगोल (बेंत की ढक्कन वाली पिटारीनुमा टोकरी जो कमर में बांधी जाती है) उठाकर मछली पकड़ने जाते।

एक दिन रुना और गुइलेङ जब नदी की ओर चले तो देखा कि उनके आगे-आगे सातों भाई भी लोंग और तूगोल लिए नदी की ओर जा रहे थे। रुना और गुइलेङ उनसे दूर रहते थे, क्योंकि ये सातों इन्हें अनाथ कहकर चिढ़ाते थे और तंग करते थे। जब वे सातों नदी में उतर गए तो दोनों भाई-बहन उनसे दूर निकल गए। दोनों नदी में उतरे, बालू और पत्थरों से नदी के आर-पार बांध बनाया जिससे पानी इकट्ठा हो और लोंग पानी में डूब सके। बांध बनाने में लगभग दोपहर हो गई। वे भी थक गए थे। बांध के पास पानी इकट्ठा होने की प्रतीक्षा भी करनी थी। पानी इकट्ठा होने पर ही मछली

पकड़ी जा सकती थी, इसलिए वे दोनों नदी के किनारे पेड़ की छाया में जाकर बैठ गए। वहां बैठकर उन्होंने चिवड़ा की पोटली खोलकर नाश्ता किया।



उधर सातों भाइयों ने मिलकर बहुत देर पहले से ही बांध बना लिया था। वे सात थे इसलिए बांध बनाने में उन्हें कम समय लगा। उन्होंने मछली पकड़ना भी शुरू कर दिया। इन्हें चिढ़ाने के लिए वहीं से पकड़ी हुई मछलियां दिखाते हुए हल्ला मचा रहे थे। वे दोनों चुपचाप देख रहे थे।

जब पानी इकट्ठा हो गया तो दोनों पानी में उतर पड़े और मछलियां पकड़ने लगे।

कुछ देर बाद एक बुढ़िया गांव की ओर से आई। वह फटेहाल थी। उसके सिर पर भारी टोकरी थी और कमर झुकी थी। वह नदी पार करके दूसरे गांव की ओर जाना चाहती थी। जहां सात भाई मछली पकड़ रहे थे, वह वहां जाकर रुकी। उसने देखा कि सातों भाइयों के बनाए बांध के कारण घुटनों से ऊपर तक पानी जमा हो गया है। 'फनेक' (तहमद) भीगने के डर से उसने एक लड़के से कहा, ''बेटा! क्या तुम्हारे बांध पर होकर मैं नदी पार कर लूं?''

चिथड़ों से ढकी बुढ़िया की बात सुनकर सातों भाइयों ने एक ठहाका लगाया और उसकी तरफ घृणा से देखते हुए एक भाई बोला, ''बुढ़िया! अपने बांध की दीवार से हम किसी को नहीं जाने देते। अपना रास्ता लो वरना टांग तोड़ देंगे।''

बुढ़िया खांसते-खांसते छड़ी के सहारे आगे चल पड़ी। खांसी की आवाज से गुइलेङ ने मुड़कर बुढ़िया को देखा। वह रुना से बोली, ''भाई रुना! देखो, बुढ़िया के सिर पर भारी टोकरी है। इसकी मदद करनी चाहिए।'' रुना ने भी बुढ़िया को देखा और लोंग के साथ नदी के किनारे की ओर चल पड़ा। टोकरी को किनारे पर रखा और बुढ़िया की तरफ बढ़ गया। बुढ़िया के पास जाकर बोला, ''मां! टोकरी मुझे दे दो। मैं तुम्हें गांव तक छोड़ आऊंगा।''

सातों भाइयों के व्यवहार से खीझी हुई बुढ़िया रुना की बात सुनकर हैरान और खुश हो गई। बोली, ''भगवान तुम्हारा भला करे, बेटा! मुझे नदी पार करवा दो। फिर मैं चली जाऊंगी।'' यह कहते हुए बुढ़िया ने टोकरी रुना के सिर पर रख दी। रुना टोकरी लेकर आगे और बुढ़िया पीछे चल पड़ी। नदी में उतरने से पहले उसने बुढ़िया का हाथ थाम लिया और बोला, ''बांध पर सम्भल कर चलना मां। आओ, मैं नदी पार कराता हूं।'' अपने बनाए गए बांध पर बुढ़िया को रुना ने नदी के उस पार पहुंचा दिया। बुढ़िया ने उसको अनेक आशीर्वाद दिए और कहा, ''बेटा! अब टोकरी मुझे देकर लौट जाओ। रुना टोकरी देने को तैयार नहीं था। वह उसे गांव तक छोड़ना चाहता था। मगर बुढ़िया ने उसकी एक न सुनी। उससे टोकरी ले ली और उसे लौटने को मजबूर कर दिया।

रुना लौटकर फिर मछली पकड़ने लगा। शाम तक दोनों की तूगोल भर गई थी। इतनी मछलियां तो वे कभी नहीं पकड़ सके थे। उन्होंने सोचा वह बुढ़िया जरूर कोई देवी थी जिसके आशीर्वाद से तूगोल भर सके हैं

दोनों भाई-बहन रोज पकड़ी गई मछलियों में से खाने भर को रख लेते थे। कुछ सुखा कर भी रख लेते थे। सूखी मछली तो भोजन के साथ इरोम्बा (चटनी) में डालने के लिए जरूरी थी। इसलिए साल भर के लिए सूखी मछली भी इसी समय जमा कर लेते थे। बाकी मछलियां वे गांव की बुढ़िया दुकानदार को देकर नमक, तेल और हल्दी ले आते थे। कभी ज्यादा होने पर पड़ोसियों को भी देते थे।

हर हफ्ते बुधवार के दिन गांव में बड़ा बाजार लगता था। आस-पास के गांवों के लोग अपना-अपना सामान लेकर आते थे। इम्फाल के व्यापारी भी आते थे। इस साप्ताहिक मेले में दोनों भाई-बहन भी जाते थे। वे फल, सब्जी, सूखी या जीवित मछली, शहद, तम्बाकू, मिर्च आदि ले जाते थे। इन चीजों के बदले गुइलेङ के लिए सूत (धागा) लाते थे। घर पर मां का करघा था। पड़ोसी औरतों से गुइलेङ कपड़ा बुनना सीख रही थी। हर घर में जरूरत का कपड़ा औरतें ही बुनती हैं। शादी के पहले हर लड़की को कपड़ा बुनना सीखना भी जरूरी है वरना शादी भी न हो। इसलिए गुइलेङ हर हफ्ते धागा जरूर लाती थी।

इस तरह दोनों बच्चे प्रेम से रहते थे। एक दिन वे जंगल से शहद और फल इकट्ठे करके लौट रहे थे। शाम हो गई थी। गांव में घुसे तो तेज बरसात होने लगी। वे तेजी से घर की ओर बढ़ रहे थे। सात भाइयों के घर से उन्होंने बुढ़िया को बाहर आते देखा। उसके कपड़े भीगे थे और वह थर-थर कांप रही थी। वे बुढ़िया के पास रुके और गुइलेङ ने बुढ़िया से कहा, ''मां! आपको घर से बाहर नहीं आना चाहिए था। इसी घर में अलाव के आगे बैठकर कपड़े सुखा लेतीं और खाकर सो जातीं। शाम हो गई है और आप कांप रही हैं।''

बुढ़िया बोली, ''बेटी! इन सात भाइयों ने मुझे घर में घुसने नहीं दिया। मैं क्या करती?''

दोनों भाई-बहन बुढ़िया को अपने घर ले गए। उसे अलाव के पास बैठा दिया जिससे उसके कपड़े सूख जाएं। गुइलेङ ने चावल मे बने एक पेय का कटोरा भरकर उसे दिया। बुढ़िया को पिलाकर भाई-बहन ने भी पीया।

गुइलेङ ने भंडार से धान निकाला उसे कूटा और चावल लाई। भोजन बनाया और तीनों खाकर सो गए। सुबह भोजन करके बुढ़िया जाने लगी। दोनों भाई-बहन ने उसको रोकने की कोशिश की मगर वह चली गई।

रुना और गुइलेङ के खेतों में उस दिन के बाद चौगुना धान होने लगा। वे लोग कुछ ही दिन में धनी हो गए। उधर सातों भाई दिन-रात मेहनत करते थे मगर उनकी उपज घटती गई। जो कुछ पैदा होता था उससे उनका पेट भी नहीं भरता था। काम्बीरेन के लोगों का कहना था—''वह बुढ़िया जरूर कोई देवी थी। हम सबको घर आए अतिथि को भोजन व सोने की जगह जरूर देनी चाहिए।''

यह बात रोङमई कबीले से धीरे-धीरे सारी कबुइ जाति में फैल गई।

अब यह परम्परा है कि लोग जरूरतमंद की मदद करते हैं और अतिथि को देवता मानकर उसका स्वागत करते हैं। किसी को भी नीची निगाह से नहीं देखते।

कौब्रू लाइशा

मणिपुर के मोइराङ नगर में चाओबा नाम का व्यक्ति अपनी पत्नी कियांचाइबी के साथ रहता था। कियांचाइबी सुंदर और सुशील थी। वह तरह-तरह के मणिपुरी नाच जानती थी। कपड़ा बुनने और कसीदाकारी में कोई स्त्री उसका मुकाबला नहीं कर सकती थी। लोग कहते थे कि उसके हाथों में जादू है। वह चाओबा की बहुत सेवा करती थी। चाओबा भी उसको बहुत चाहता था। दोनों बहुत सुखी थे, किन्तु उनके जीवन में एक ही दुख था कि उनकी कोई संतान नहीं थी।

चाओबा का एक मित्र था—तोमचा। उसने एक दिन चाओबा से कहा—''मित्र चाओबा, चलो कौब्रू पर्वत की यात्रा पर चलें। इबोहल, तोम्बा और मचा भी जा रहे हैं। कौब्रू पर्वत का प्राकृतिक सौंदर्य देखकर आनंद आ जाएगा।''

चाओबा : भाई तोमचा, जैसे हिमालय में कैलाश पर्वत तीर्थ स्थान है। उसी प्रकार मणिपुर में कौब्रू तीर्थ स्थान है। सुना है वहां की यात्रा करने से मनोकामना पूरी हो जाती है।

तोमचा : हां चाओबा! कहते हैं कि कौब्रू से जो कुछ भी मांगो वह अवश्य मिल जाता है। तुम भी कौब्रू से एक पुत्र क्यों नहीं मांग लेते।

चाओबा : हां भाई! मैं भी यही सोच रहा था। चाइबी मुझसे कई बार कौब्रू जाने और संतान के लिए मन्नत मांगने को कह चुकी है।

तोमचा : मन्नत तो मांगेंगे ही, कौब्रू पर्वत के प्राकृतिक सौंदर्य के दर्शन भी करेंगे। वहां के घने जंगल में दुर्लभ जड़ी-बूटियां मिलती हैं। इन जड़ी-बूटियों को लाकर बेचने से खूब पैसा मिलेगा।

चाओबा : ओहो! तब तो एक पंथ दो काज हो जाएंगे।

तोमचा : तो फिर देर किस बात की। चलो कल सवेरे ही चलो।

चाओबा : ठीक है। कल पौ फटते ही निकल जाएंगे। तुम इबोहल, तोम्बा और मचा को भी कह देना।

तोमचा : उन्हें क्या कहना, वे तो तैयार ही हैं। तुम तैयार रहना।

घर पहुंचकर चाओबा ने चाइबी को कौब्रू की यात्रा की सारी बात बताई। संतान की मन्नत मांगने चाओबा कौब्रू जा रहा है, यह सुनकर चाइबी बहुत खुश हुई।

दूसरे दिन पौ फटने के साथ ही पांचों मित्र मोइराङ से चल पड़े। सबकी पीठ पर एक-एक गठरी बंधी थी। जिसमें उनके खाने-पीने व सोने का सामान था। चाओबा और मचा के हाथों में दांव थे। तोमचा और इबोहल के पास भाले और तोम्बा के पास तलवार थी। तीन दिन पैदल चलकर वे कौब्रू पर्वत पर पहुंचे। शाम हो चुकी थी। सर्दी और जंगली जानवरों से बचाव के लिए पांचों मित्रों ने सूखी लकड़ियां बटोरकर अलाव जलाया। भोजन बनाया गया। भोजन करने के बाद कुछ देर तक वे कौब्रू के घने जंगलों, जंगली जानवरों, झरनों और रंग-बिरंगे चहचहाते पक्षियों की बातें करते रहे। फिर अलाव के पास ही बिस्तर लगाकर सोने की तैयारी की गई।

इबोहल ने कहा–"मैं और तोम्बा आधी रात तक पहरा देंगे। तब तक तीनों सो जाओ। आधी रात के बाद हम सो जाएंगे और तुम पहरा देना।"



पहरे पर तैनात दोनों मित्रों ने भाला और तलवार बगल में रख लिए। चाओबा और उसके दो मित्र थके हुए थे। बिस्तर पर लेटते ही उन्हें गहरी नींद आ गई। कुछ देर बाद पहरे पर बैठे दोनों मित्रों ने देखा कि एक हाथी सूंड उठाए उनकी ओर तेजी से आ रहा है। वे हाथी से डरकर भाग खड़े हुए। डर के कारण उनके मुंह से आवाज भी नहीं निकल सकी। कुछ दूर जाकर उन्होंने मुड़कर देखा कि कौब्रू लाइशा (कौब्रू का हाथी-देवता) चाओबा को सूंड में उठाए लिए जा रहा था।

चाओबा की आंख खुली तो अपने-आपको हाथी की सूंड में पाया। वह भय से कांपने लगा। उसने चिल्लाने की कोशिश की, मगर मुंह से आवाज भी नहीं निकली। हाथी उसको लिए चला जा रहा था।

चाओबा न जाने कब बेहोश हो गया। जब उसे होश आया, तब सवेरा हो चुका था। हाथी कहीं से सूंड में पानी भर लाया था और चाओबा के मुंह पर छिड़क रहा था। चाओबा उठकर बैठ गया। चाओबा ने देखा कि पास ही एक हथिनी बैठी थी। हथिनी की आंखों से आंसू बह रहे थे। वह उदास दिखाई दे रही थी। चाओबा को हथिनी के दुख का कारण समझ में नहीं आया। वह उठा और हथिनी के पास गया।

हथिनी ने अपनी सूंड बढ़ाकर चाओबा के हाथ को ऐसे छुआ मानो वह चाओबा का स्वागत कर रही हो। चाओबा ने भी सूंड को सहलाकर हथिनी के प्रति सहानुभूति और स्नेह दिखाया। तब हथिनी ने सूंड से अपने पांव को छुआ। चाओबा ने हथिनी के पांव की ओर देखा। हथिनी के दाहिने पांव में एक बड़ा कांटा चुभा हुआ था और उससे खून की धारा निकलकर सूख गई थी। अब उसे यह समझने में देर नहीं लगी कि हाथी उसे क्यों उठाकर लाया था। वह हथिनी के पैर के पास बैठ गया और धीरे-धीरे कांटा निकालने का प्रयत्न करने लगा। कांटा काफी अंदर तक घुस गया था। चाओबा ने बड़ी सावधानी से धीरे-धीरे कांटा बाहर निकाला, फिर एक बूटी के पत्तों को मसलकर घाव पर लगा दिया। हथिनी की पीड़ा मिट गई। उसने सुख की सांस ली। कौब्रू लाइशा यह सब देख रहा था। हथिनी को पीड़ा से मुक्त देखकर वह प्रसन्न हो गया। वह बार-बार चाओबा के कंधे और मुंह को अपनी सूंड से छूने लगा।

अगले दिन कौब्रू लाइशा चाओबा को अपनी पीठ पर बैठाकर उस स्थान की ओर चला, जहां से वह उसे उठाकर लाया था। किन्तु वहां पहुंचने पर चाओबा ने पाया कि उसके साथी वहां नहीं थे। वे तो डरकर उसी रात मोइराङ भाग गए थे। हां, वहां उसे अपनी पोटली और दांव जरूर मिले। चाओबा को अपने साथियों से अलग हो जाने का बड़ा दुख हुआ। मगर उसे संतोष था कि उसे कौब्रू लाइशा और हथिनी जैसे नए साथी मिल गए थे। उसने निश्चय किया कि वह अपना काम पूरा करके ही लौटेगा। अब चाओबा कौब्रू लाइशा और हथिनी के साथ जंगलों में घूमने तथा जड़ी-बूटियां इकट्ठी करने लगा। हाथी और हथिनी चाओबा की हर तरह से सहायता करते। उसके इशारे पर वे फल वाले वृक्ष के नीचे रुकते। वे सूंड से फल तोड़कर उसे देते। चाओबा उन्हें खाकर अपनी भूख मिटा लेता। वह इन नए साथियों के साथ खुश था।

इधर जब कौब्रू लाइशा चाओबा को उठा ले गया था तो उसके साथी बहुत डर गए। वे दूसरे दिन सवेरे ही कौब्रू से भाग खड़े हुए। जब वे मोइराङ पहुंचे तो उन्होंने सबको हाथी द्वारा चाओबा को ले जाने की बात बताई। चाइबी यह सुनकर बेहोश हो

गई। उसके दुख की कोई सीमा नहीं रही। चाओबा के अलावा उसका संसार में कोई भी नहीं था।

लोगों ने कहा—"हाथी ने उसे मार डाला होगा।" इसीलिए लोगों ने परम्परानुसार पलाश का पुतला बनाकर चाओबा का दाह-संस्कार किया। श्राद्धकर्म आदि भी विधिपूर्वक सम्पन्न हुए। बेचारी चाइबी घर में अकेली रह गई। उसे विश्वास था कि चाओबा एक दिन अवश्य लौटकर आएगा। यद्यपि लोग उसे पागल समझते थे, किन्तु वह चाओबा की रोज प्रतीक्षा करती थी।

जब चाओबा के पास ढेर सारी जड़ी-बूटियां जमा हो गईं, तो उसे अपनी पत्नी और घर की सुधि आई। उसने कौब्रू की झील में स्नान किया, कौब्रू से संतान की प्रार्थना की और गठरी उठाकर चलने को तैयार हो गया। यह देखकर हाथी-हथिनी की आंखों में भी आंसू आ गए। चाओबा ने उनके आंसू पोंछे, कौब्रू लाइशा को प्रणाम किया और उससे कहा—"जब तुम्हारे बच्चा हो तो उसे मुझे दे देना।"

यह प्रार्थना कर वह चल पड़ा। मगर कौब्रू लाइशा ने उसका रास्ता रोक लिया। उसने चाओबा को अपनी सूंड से उठाकर पीठ पर चढ़ा लिया और उसे घर छोड़ने चल पडा।

जब कौब्रू लाइशा चाओबा को लेकर मोइराङ पहुंचा तो गांव के लोग उसे जीवित देखकर आश्चर्यचकित रह गए। चाइबी की खुशी का तो ठिकाना ही न था। उसने हाथी को प्रणाम किया और उसे नारियल-गुड़ खाने के लिए दिए।

लगभग एक वर्ष बाद एक दिन चाओबा ने देखा कि कौब्रू लाइशा फिर मोइराङ की ओर चला आ रहा है। पीछे-पीछे उसकी हथिनी और उनका बच्चा भी है। चाओबा दौड़कर कौब्रू लाइशा की सूंड से लिपट गया। कौब्रू लाइशा और उसकी हथिनी की आंखों से भी खुशी के आंसू बह निकले। वे अपनी सूंड से चाओबा को बार-बार छूकर अपना स्नेह जताने लगे। चाइबी दौड़कर घर के भीतर गई और फिर ईख, नारियल और गुड़ ले आई। अब तक चाओबा के घर के सामने सारा मोइराङ इकट्ठा हो चुका था। चाइबी ने कौब्रू लाइशा और उसकी हथिनी को प्रणाम किया और ईख, नारियल तथा गुड़ की भेंट सामने रखी।

कौब्रू लाइशा और हथिनी ने घुटने के बल बैठकर इस भेंट को स्वीकार किया। एक ओर उनका बच्चा और दूसरी ओर मोइराङ के लोग इन दो मित्रों का यह मिलन देखते रहे। तभी कौब्रू लाइशा ने अपनी सूंड में अपने बच्चे को लेकर चाओबा के सामने प्रस्तुत किया। बच्चा बहुत सुंदर और प्यारा था। चाओबा और चाइबी प्रेम से उसके कोमल शरीर पर हाथ फेरने लगे। कौब्रू लाइशा और हथिनी अपनी-अपनी सूंड उठाकर धीरे से चिंघाड़े मानो कह रहे हों हमारी भेंट स्वीकार करो। चाओबा की प्रसन्नता का ठिकाना न था।

मुरगा क्यों बोलता है

कासा-अखाबा (सृष्टिकर्ता) ने पहले पृथ्वी का निर्माण किया। उसके बाद उसने गरजता हुआ समुद्र बनाया। पृथ्वी पर उसने अनेक पशु-पक्षी बनाए। उन सभी प्राणियों में मनुष्य नामक श्रेष्ठ प्राणी की रचना की। उसने समुद्र में अनेक जीव-जंतु बनाए। पृथ्वी व सागर अंधकार में डूबे हुए थे। ठंड से प्राणी कांप रहे थे। अतः पूरी सृष्टि को प्रकाशित करने के लिए और ताप देने के लिए उसने एक आग का गोला बनाया। आग के गोले से सृष्टि प्रकाशित हो गई और ठंड का प्रकोप भी दूर हो गया। सभी प्राणियों ने कासा-अखाबा को धन्यवाद दिया।

कासा-अखाबा प्राणियों के काम करने व आराम करने का समय निश्चित करना चाहता था। उसने सोचा क्यों न इस विषय में प्राणियों की राय ली जाए? अतः उसने सभी प्राणियों की एक सभा बुलाई। तब कासा-अखाबा ने बहुत ही स्नेह से सभी को सम्बोधित करते हुए कहा—"मैंने तुम्हारे लिए सृष्टि की। तुम्हें प्रकाश व ताप देने के लिए मैंने एक आग के गोले का निर्माण किया। अब तुम अपने काम और विश्राम के लिए समय निर्धारित करो। तुम सब इस विषय में अपनी-अपनी राय दो। मैं तुम्हें राय देने की पूरी स्वतंत्रता देता हूं।"

कासा-अखाबा यह कहकर अपने आसन पर बैठ गए। वह प्राणियों की राय की प्रतीक्षा कर रहे थे। किन्तु सभी प्राणी मौन थे। वे सृष्टिकर्ता के सम्मुख श्रद्धा से सिर झुकाए बैठे थे। उनके सामने बोलने का किसी में साहस न था। कासा-अखाबा ने फिर कहा—"तुम अपने विचार बताओ जिससे मैं समय निर्धारित कर सकूं।"

फिर बहुत देर तक चारों तरफ शांति छाई रही किन्तु अंत में एक छछूंदर ने मौन तोड़ा—"हे कासा-अखाबा! एक वर्ष का दिन हो जिससे सब प्राणी साल भर काम कर सकें और एक वर्ष की रात हो जिससे वे साल भर आराम कर सकें।"

छछूंदर का प्रस्ताव सुनते ही प्राणियों की उस विराट सभा में कोलाहल मच गया। सभी ने चीख-चीख कर छछूंदर के प्रस्ताव का विरोध किया क्योंकि छछूंदर का प्रस्ताव मूर्खतापूर्ण था। उसने बिना सोचे-समझे प्रस्ताव किया था। चारों तरफ से यही आवाज आ रही थी—"कोई साल भर तक कैसे काम कर सकता है और साल भर सो भी कैसे सकता है? यह असम्भव है।"

उसी समय और भी प्रस्ताव आए किन्तु उस कोलाहल में खो गए। तोते ने छछूंदर के प्रस्ताव का घोर विरोध किया और उसकी खूब खिल्ली उड़ाई, परंतु वह कोई ठोस प्रस्ताव न रख सका।

छछूंदर के प्रस्ताव को कासा-अखाबा ने भी बेकार माना। परंतु उसने अपनी ओर से कोई निर्णय नहीं दिया। कुछ देर में हो-हल्ला शांत हो गया। फिर शांति और मौन छा गया। तब 'चाकलेन' (पक्षी जो घास और सरकंडों से अपना घोंसला बनाता है और जिसकी आवाज से तांखुल नागा शकुन या अपशकुन का निर्णय करते हैं) ऊंचे बांस की शाखा से बोला—''हे स्वामी! मेरे मित्र छछूंदर का प्रस्ताव लागू नहीं किया जा सकता हैं क्योंकि न तो कोई प्राणी साल भर लगातार काम कर सकता है और न ही सो सकता है। प्रत्येक प्राणी को कुछ समय काम करने के बाद विश्राम चाहिए। कुछ समय काम करने के बाद प्राणी थक जाते हैं और उन्हें आराम की जरूरत पड़ती है। इसलिए मेरा आपसे नम्र निवेदन है कि ऐसी ही व्यवस्था कीजिए।''



कासा-अखाबा चाकलेन के बुद्धिमत्तापूर्ण प्रस्ताव के महत्व को समझ गया। उसने चाकलेन की बुद्धिमत्ता से प्रसन्न होकर उसे संसार में भविष्यवाणी करने के लिए नियुक्त किया। इसके बाद कासा-अखाबा ने मुरगे को बुलाया और उसे आज्ञा दी—''हे मुरगे! जब दिन भर काम करके तुम थक जाओ तो बांग दो जिससे दिन का अंत हो।

सूरज भी विश्राम करे और अन्य सभी प्राणी भी। सबके साथ तुम भी सो जाओ और जब तुम आराम कर चुको और अपने को तरो-ताजा महसूस करो तो तुम फिर बांग दो। तुम्हारी यह बांग रात की सीमा होगी। सूरज फिर लौट आएगा और लोग अपने काम पर लग जाएंगे।''

नागा जाति का विश्वास है कि कासा-अखाबा के इस आदेश का पालन करने के लिए आज भी मुरगा बांग देता है। छछूंदर पर मूर्खतापूर्ण प्रस्ताव के कारण लोग हंसे थे। उसने बिना विचारे बात कही थी, इसलिए वह लज्जित होकर पृथ्वीतल में चला गया। सभी प्राणियों ने उसे शाप दिया—''तुम भूमि में छिपे रहो। यदि तुम ऊपर आओगे तो अवश्य मारे जाओगे।''

तांखुल जाति में कहा जाता है कि इसीलिए छछूंदर आज भी भूमिगत है। वहां वह पौधों की जड़ें आदि खाकर अपना जीवन-यापन करता है।जब कभी वह शाप का उल्लंघन करके भूमि पर आता है तो उसे जंगली बिल्लियां मार डालती हैं। उसे सोच-समझकर बोलना चाहिए था। बिना सोचे बोलने का दंड वह आज भी भोग रहा है।

तांखुल आज भी चाकलेन की आवाज के संकेत से कार्य करते हैं। यदि अपशकुन का संकेत हो तो वे कभी भी काम पर नहीं जाते और घर से बहुत दूर चले जाने पर भी लौट आते हैं।

मंत्री का चुनाव

मणिपुर में कभी मोइराङ नामक एक गणराज्य था। वहां का मंत्री बूढ़ा हो गया था। वह बुढ़ापे के कारण मंत्री पद छोड़कर अवकाश ग्रहण करना चाहता था और बचा हुआ जीवन ईश्वर भक्ति में बिताना चाहता था। उसने राजा से प्रार्थना की कि उसे सेवा निवृत किया जाए। राजा ने मंत्री के काम की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए उसे नए मंत्री के चुनाव तक रुकने का आग्रह किया। बूढ़े मंत्री को राजा की आज्ञा का पालन करना पड़ा।

राजा नए मंत्री की खोज करने के लिए चिंतित हो गया। वह चाहता था कि उसका नया मंत्री बहुत ही बुद्धिमान होना चाहिए। उसने एक बुद्धिमान मंत्री की खोज के लिए एक उपाय सोचा।

राजा के पास एक बूढ़ा हाथी था। वह हाथी मरने ही वाला था। राजा ने काकचिङ गांव के प्रधान को बुलाया और उसे उस बूढ़े हाथी को सौंपते हुए आज्ञा दी—"इस हाथी को अपने गांव ले जाओ। इस की पूरी तरह देखभाल करना। हाथी मरना नहीं चाहिए और मर जाए तो इसकी सूचना मुझे तुरंत दी जाए। जो भी व्यक्ति हाथी के मरने की खबर लेकर आएगा उसे मौत की सजा दी जाएगी।"

राजा की आज्ञा सुनकर गांव-प्रधान के रोंगटे खड़े हो गए। हाथी को देखने से लगता था कि यह अब चंद दिनों का मेहमान है। इसके मरते ही राजा को सूचना तो देनी ही होगी। जो सूचना देगा वह बेचारा मुफ्त में मारा जाएगा।

गांव-प्रधान बूढ़ा और अनुभवी आदमी था। वह बहुत चिंतित हो गया। मगर कर ही क्या सकता था? राजा की आज्ञा न मानने से उसके प्राण संकट में पड़ सकते थे। उसने सोचा हाथी को गांव तो ले चलें। वह हाथी व कुछ सैनिकों के साथ अपने गांव की ओर चल पड़ा। उसने सोचा सारे गांव के लोगों के सामने यह समस्या रखी जाए। शायद गांव के लोग कोई उपाय निकाल सकें।

वह पांच दिन की यात्रा से थका हुआ था। एक दिन का घोड़े का रास्ता बूढ़े हाथी ने पांच दिन में तय किया था। पांचवें दिन सूरज डूबते-डूबते वह गांव में घुसा। उसने थकान की परवाह नहीं की और ढिंढोरा पिटवाकर गांव के बच्चों से बूढ़ों तक को इकट्ठा किया। सभी औरतों को भी बुलवाया।



जब लोग प्रधान की 'शंडोइ' (मंडप) में आकर बैठ गए तो प्रधान ने खड़े होकर कहना शुरू किया—"हे गांववालो! राजा की आज्ञा से मुझे यह बूढ़ा-मरियल हाथी यहां लाना पड़ा है। यह हाथी हमारे लिए एक बला बनकर आया है। इसके मरते ही हमें राजा को सूचना देनी होगी। जो व्यक्ति इसके मरने की खबर लेकर जाएगा उसे राजा मौत की सजा देगा। इस तरह हमारे गांव का कोई-न-कोई आदमी जरूर मारा जाएगा। आप लोग इस समस्या का कोई हल निकालें। हम किस तरह एक आदमी की जान बचा सकते हैं? सूचना देने जाएगा कौन? इन दोनों समस्याओं का कोई हल खोजिए।"

प्रधान की बात सुनकर गांव के लोग भी चिंता में डूब गए। कोई मरने को तैयार नहीं था। आपस में कानाफूसी होने लगी। अंत में यह निर्णय हुआ कि हाथी की खूब सेवा-टहल की जाए। उसको खूब खिलाया-पिलाया जाए जिससे हाथी जल्दी न मरे। हाथी जिसके द्वार पर मरेगा, उसी को राजा को खबर देने जाना होगा। इस निर्णय के साथ सभा समाप्त हो गई।

गांव के लोग हाथी को तरह-तरह की चीजें खिलाने लगे। कोई उसके लिए गन्ने लाता, तो कोई गुड़। कोई भात खिलाता तो कोई दाल। हाथी की खूब सेवा होने लगी। मगर एक-न-एक दिन हाथी मरेगा ही, यह जानकर लोग उसे अपने द्वार से दूर भगाने

की कोशिश करते थे। आखिर एक दिन हाथी गांव के चौगान में मर गया। अब सवाल था कि इसकी सूचना देने कौन जाए? फिर प्रधान ने सभा बुलाई।

सभी लोग 'शंडोई' में आकर बैठ गए। बूढ़े लोग अपने-अपने हुक्के गुड़गुड़ा रहे थे। सबके चेहरे पर चिंता दिखाई दे रही थी। 'शंडोई' में हुक्कों का धुंआ मंडरा रहा था। शांति छाई हुई थी। आखिर गांव के प्रधान ने शांति भंग की।—''भाइयो! हाथी मर चुका है। राजा को खबर नहीं दी गई तो पूरे गांव पर विपत्ति का पहाड़ टूट पड़ेगा। हमें गांव की रक्षा करने के लिए कुर्बानी देनी ही होगी। गांव में कौन ऐसा वीर है जो अपना बलिदान देकर हमारी रक्षा करे?''

लगभग तीस वर्ष की आयु का तोम्बी नामक युवक उठ खड़ा हुआ। उसने कहा—''मैं दूंगा।''

गांववालों के चेहरे पर खुशी की लहर दौड़ गई। मगर तोम्बी का बूढ़ा बाप उदास हो गया। उसकी आंखों से आंसू बहने लगे। उसका एक मात्र बेटा तोम्बी मौत के मुंह में जा रहा था। किसी में यह साहस नहीं था कि उसे धीरज दे सके।

कुछ ही देर में तोम्बी अपने टट्टू पर सवार होकर मोइराङ की ओर चल पड़ा। दरबार में पहुंचकर राजा को साष्टांग प्रणाम किया। फिर खड़ा हुआ और हाथ जोड़कर बोला—''मैं सलाम वंश का तोम्बी हूं। मैं काकचिंङ का रहने वाला हूं। श्रीमान की आज्ञा हो तो एक समाचार देना चाहता हूं।''

''कहो युवक!'' राजा ने उस निडर युवक को घूर कर देखते हुए कहा।

''श्रीमान! आपने जो हाथी हमारे गांव में भेजा था वह सो रहा है। न चलता है, न उठता है, न कान हिलाता है और न ही सूंड उठाता है। न कुछ खाता है और न ही कुछ पीता है।''

राजा यह तो समझ ही गया कि हाथी मर चुका है। मगर युवक कितना बुद्धिमान है। खबर भी पहुंचा दी मगर दंड से बचने के लिए उसने हाथी मर गया नहीं कहा है। निश्चय ही यह युवक बुद्धिमान है। राजा ने प्रसन्न होकर उसे अपना मंत्री नियुक्त कर लिया।

पहली मौत

कासा-अखाबा (सृष्टिकर्ता) ने पृथ्वी, प्राणी, सूरज, चांद और तारे बनाए। उसने प्राणियों को दिन में खाने व काम करने तथा रात में सोने की आज्ञा दी। कासा-अखाबा की इस व्यवस्था से सारे प्राणी प्रसन्न थे। वे सब दिन भर काम करते और दिन में ही भोजन करके रात को सो जाते थे। मगर एक दिन एक लोमड़ी दिन भर सोई रही। वह भोजन भी नहीं कर सकी। आधी रात के समय उसे भूख लगी और उसकी नींद टूट गई। वह भूख के मारे जोर-जोर से चिल्लाने लगी। जब भूख सहन नहीं हुई तो वह एक अखरोट तोड़ने लगी। अखरोट तोड़ने में तो वह सफल हो गई परंतु अखरोट का टुकड़ा उसके मुंह से छूट कर केकड़े पर जा गिरा।

केकड़ा मजे से गहरी नींद में सोया था। अखरोट की चोट से उसकी नींद टूट गई और उसे असहृय पीड़ा हुई। वह आग बबूला हो गया। क्रोध में उसने अपना विवेक खो दिया। पास ही चींटियों का घर था। चींटियां दिन भर काम करने के कारण थक कर गहरी नींद में सोई हुई थीं। केकड़े ने गुस्से में उनका घर तहस-नहस करना शुरू किया। चींटियां भी इस हमले से क्रोधित हो उठीं और भाग कर पास ही सोए बनैले सूअर के शरीर पर चढ़ गईं। क्रोध में पागल तो थीं ही। लगीं बेचारे सूअर को काटने।

सूअर हजारों चींटियों के काटने से जग गया और मारे दर्द के चीत्कार कर उठा। सारे शरीर पर रेंगती चींटियों से उसे झुरझरी हुई। वह क्रोधित हो केले के वृक्षों को गिराने लगा। एक केले पर एक चमगादड़ लटक रहा था। जब केले का वृक्ष गिरने लगा तो वह क्रोधित होकर उड़ने लगा। वह सोने के लिए जगह ढूंढने लगा और उड़ते-उड़ते एक हाथी की नाक में जा घुसा।

हाथी गहरी नींद में था। हाथी चमगादड़ के नाक में घुसते ही जग पड़ा। नाक में झुरझुरी होने लगी और असहृय पीड़ा भी। वह क्रोध से चिंघाड़ने लगा। हाथी ने चमगादड़ को निकालने के लिए जोर-जोर से नाक से फूंक मारना शुरू किया मगर चमगादड़ तेज हवा से घबराकर हाथी की नाक में जोर से चिपक गया। हाथी की नाक चमगादड़ को एक कोमल बिछौने के समान अच्छी लगी। उसने उसे बिस्तर समझकर वहीं रात बिताने की ठान ली।

इधर नाक में हो रही झुरझरी से हाथी बेचैन हो उठा। वह उछलने-कूदने लगा। उसकी चिंघाड़ से सारे प्राणी जग पड़े। चारों ओर हाहाकार मच गया। हाथी

उछलते-कूदते एक सोए हुए आदमी पर चढ़ गया। आदमी चिल्लाने लगा। अंत में वह मर गया। सब प्राणी जग गए थे। अंधेरा था। किसी को कुछ समझ में नहीं आ रहा था। सभी प्राणी चिल्लाने लगे। कुहराम मच गया।

पौ फटने तक यह कुहराम मचा रहा। सभी प्राणी अब कुछ शांत हुए और इधर-उधर देखने लगे। उन्होंने देखा कि सारे प्राणी जगे हैं, केवल एक आदमी सो रहा है। सब उसके पास पहुंचे और उसे जगाने लगे। यह संसार की पहली मौत थी। वे नहीं जानते थे कि वह मर गया है। वे उसे जगाने के लिए फिर चिल्लाने लगे। एक बार फिर कोलाहल मच गया।



इस शोर को सुनकर कासा-अखाबा को फिर पृथ्वी पर आना पड़ा। उसके आने से सब प्राणी शांत हुए। कासा-अखाबा ने प्राणियों में चिल्लाने का कारण पूछा। उन्होंने कहा कि हम इस आदमी को जगा रहे थे। कासा-अखाबा ने कहा अब यह कभी नहीं जगेगा। इसे हाथी ने कुचल कर मार डाला है। उन्होंने हाथी को बुलाया तथा मनुष्य को मारने का कारण पूछा। हाथी अभी भी दर्द से बेचैन था और उसकी आंखों से आंसू बह रहे थे। हाथी ने उत्तर दिया—''हे स्वामी! मैं आदमी को मारना नहीं चाहता था। भला मैं उसे क्यों मारना चाहूंगा। मैं तो उसे अपना बड़ा भाई मानता हूं और उसका आदर करता हूं। सारा दोष इस दुष्ट चमगादड़ का है जो मेरे नाक में घुस गया। मैं गहरी नींद में

था। इस दुष्ट के नाक में घुसने से मेरी नींद ही नहीं टूटी, झुरझुरी भी हुई। मैं दर्द से व्याकुल होकर उछल-कूद करने लगा और अनजाने में आदमी कुचला गया।''

अब कासा-अखाबा ने चमगादड़ को हाथी की नाक से निकलने की आज्ञा दी। वह बाहर आया। कासा-अखाबा ने उससे हाथी की नाक में घुसने का कारण पूछा।

चमगादड़ बोला—''हे मालिक! मेरा इसमें कोई दोष नहीं है। मैं एक केले के पेड़ पर आराम से सो रहा था। वही मेरा घर था। इस कुरूप और भद्दे सूअर ने दांतों से मार-मार कर उस केले को गिराया। मैं दुखी होकर उड़ने लगा और सोने के लिए जगह की तलाश में घूम रहा था। अंधेरे में हाथी की नाक में घुस गया। मैं उसकी नाक को बिस्तर समझ कर सो गया। सारा कसूर इस सूअर का है।''

अब कासा-अखाबा ने सूअर से पूछा कि उसने केले को क्यों गिराया? सूअर चींटियों के काटने से अभी भी दुखी था। वह बोला—''हे मेरे स्वामी! इसमें मेरा तनिक भी दोष नहीं। मैं गहरी नींद में सो रहा था। मुझे असंख्य चींटियों ने काटना शुरू किया। मैं असह्य पीड़ा से व्याकुल और असहाय होकर केले के वृक्षों को गिराने लगा। सारा दोष इन चींटियों का है जिन्होंने काटकर मुझे पागल बना दिया था।''

अब कासा-अखाबा ने चींटियों से सूअर को काटने का कारण पूछा।

चींटियां पूरी नींद न सो पाने के कारण दुखी थीं। वे दुख भरे स्वर में बोलीं—''हे स्वामी! हम निर्दोष हैं। दिन भर की कड़ी मेहनत के बाद हम गहरी नींद में सो रही थीं कि दुष्ट केकड़े ने हमारे घर पर धावा बोल दिया। हम क्रोध में सूअर को काटने लगीं। दोषी है तो केकड़ा।''

कासा-अखाबा ने अब केकड़े से स्पष्टीकरण मांगा।

''हे मेरे मालिक! मैं क्यों चींटियों का घर नष्ट करता। यह तो लोमड़ी की शैतानी है जिसने मुझ पर अखरोट गिराया और मैं असह्य पीड़ा से बेचैन हो उठा। क्रोध में मैंने चींटियों का घर उजाड़ दिया किन्तु यदि शैतान लोमड़ी अखरोट नहीं गिराती तो मैं ऐसा कभी नहीं करता।''

कासा-अखाबा ने लोमड़ी से पूछा कि तुमने केकड़े पर अखरोट क्यों गिराया।

लोमड़ी चालाक थी। उसने अपनी भूल छिपाने की कोशिश करते हुए कहा—''हे स्वामी! इसमें मेरा कोई दोष नहीं है। मैं तो गहरी नींद में सो रही थी। मुरगे का काम था भूख लगने पर बांग देना और सूरज को बुलाना ताकि सवेरा हो और प्राणी भोजन करके काम शुरू करें। मुझे बहुत जोर की भूख लगी मगर मुरगे ने बांग नहीं दी। मैं जग गई। खूब चिल्लाई। तब भी मुरगा नहीं बोला। भूख से बेचैन होकर मैंने अखरोट तोड़ा जो

केकड़े पर जा गिरा। मुरगा ही इस मौत के लिए दोषी है। हे स्वामी! इसे ही दंड दीजिए।''

कासा-अखाबा ने लोमड़ी से कहा—''भूल मुरगे की नहीं तुम्हारी है। तुम दिन में सोई रही। तुमने शाम का भोजन नहीं किया, इसलिए मुरगे के बांग देने से पहले ही तुम्हारी नींद टूट गई। तुमने रात में खाने की कोशिश करके मेरे बनाए गए नियम तोड़े हैं, इसलिए संसार में उपद्रव हुआ और पहली मौत भी हुई।''

सारे प्राणी फिर चिल्लाने लगे। उनकी मांग थी कि लोमड़ी को मृत्यु दंड दिया जाए। कासा-अखाबा ने सबको शांत किया और फिर शांत भाव से बोले—''मैं दंड देने के पक्ष में नहीं हूं। सारे उपद्रव की जड़ लोमड़ी नहीं, क्रोध है। यदि केकड़े, चींटियों, सूअर, चमगादड़ और हाथी ने क्रोध नहीं किया होता तो वे विवेक नहीं खोते और विवेक नहीं खोते तो न उपद्रव होता और न मौत ही।''

प्राणी कुछ शांत हुए किन्तु उन्होंने फिर सृष्टिकर्ता से लोमड़ी को नियम भंग करने के लिए दंड देने की प्रार्थना की। कासा-अखाबा ने फिर शांत भाव से कहा—''अभी भी तुम क्रोध का त्याग नहीं कर पा रहे हो, इसीलिए तुम्हारे मन में हिंसा का भाव है।''

प्राणियों ने फिर कहा—''हे स्वामी! दंड के अभाव में प्राणी भविष्य में भी आपके नियम तोड़ेंगे, इसलिए लोमड़ी को दंड दीजिए।''

''जो प्राणी नियम तोड़ेगा, वह अपने किए का खुद ही फल भोगेगा। जब सब प्राणी सोएंगे, यह लोमड़ी चिल्लाती रहेगी और जब सोएगी तो इसे एक टांग उठाकर सोना पड़ेगा। मगर जब भी कोई प्राणी क्रोध करेगा, इस संसार में उपद्रव होगा।'' इतना कहकर कासा-अखाबा स्वर्ग चले गए।

लोमड़ी तब से रोज रात को रोती है और सोने पर वह एक टांग ऊपर उठाए रहती है।

तलाश

कतन नाम का एक किसान मणिपुर राज्य के नम्बोल गांव में रहता था। वह अनपढ़ था। खेती करके अपने परिवार का पालन-पोषण करता था। वह बहुत बुद्धिमान था। उसकी बुद्धिमता की चर्चा आसपास के गांवों में फैली हुई थी। वह बहुत परिश्रमी भी था। खेतों में काम करता रहता था। लोग उससे सलाह लेने के लिए आते थे। शाम को उसके घर की 'शंङोई' (मंडप) में लोगों की भीड़ जमा हो जाती थी। वह लोगों को कथा-कहानियां सुनाता था और पूछे गए सवालों का जवाब भी देता था।

एक दिन 'शंङोई' में बैठे लोगों में से एक व्यक्ति ने सूचना दी कि मणिपुर का बूढ़ा मुख्य मंत्री अब सेवा निवृत्त होकर तीर्थ यात्रा पर जाना चाहता है। राजा ने मुख्य मंत्री से कहा है कि तुम एक बुद्धिमान मंत्री की खोज करो। जब कुशल मंत्री मिल जाएगा तो तुम्हें सेवा निवृत किया जाएगा। मुख्य मंत्री, गृह मंत्री और रक्षा मंत्री के साथ योग्य व्यक्ति की खोज में राजधानी से निकल पड़े हैं। वे पूरे राज्य का दौरा करके योग्य व्यक्ति की खोज कर रहे हैं।

यह बात सुनकर एक वृद्ध बोला—"कतन से उनकी भेंट हो जाए तो वे इसी को मुख्य मंत्री बना दें।"

यह सुनकर कतन बोला—"अरे बाबा! कहां राजा भोज और कहां गंगू तेली। राज्य का मुख्य मंत्री तो पढ़ा-लिखा होना चाहिए। मैं अनपढ़ गरीब किसान हूं। मुझे मुख्य मंत्री तो क्या मंत्री भी नहीं बनाया जा सकता।"

"नहीं भाई! ऐसा नहीं है। मंत्री के चुनाव के बाद उसे पंडित पढ़ना-लिखना सिखाते हैं और पुराने मंत्री राज-काज की रीति-नीति समझाते हैं। अब तक ऐसा ही होता रहा है," बूढ़े ने कतन से कहा।

कतन ने बात टालने के लिए कहा—"रात काफी बीत गई है। अब सब जाकर सोएं। मुझे सुबह खेत जोतना है।"

सब लोग एक-दूसरे से विदा लेकर अपने-अपने घर चले गए। दूसरे दिन सवेरे कतन हल-बैल लेकर अपने खेत पर चला गया। दोपहर तक उसने खेत जोता। उसके बाद बैलों को चरने के लिए छोड़कर वह खेत के पास ही आराम करने के लिए लेट

गया। कुछ देर बाद उसके कानों में घंटी की आवाज आई। उसने देखा कि तीन हाथी चले आ रहे हैं। हाथियों को देखकर भी वह लेटा रहा। जब हाथी उसके निकट आए तो हाथी पर सवार एक व्यक्ति ने कहा—''सोने वाले, खड़े हो जाओ।''

''क्यों?''

कतन की निडरता को देखकर पूछने वाला मंत्री चौंक पड़ा। उसने फिर कहा—''हमें जाने के लिए रास्ता दो।''

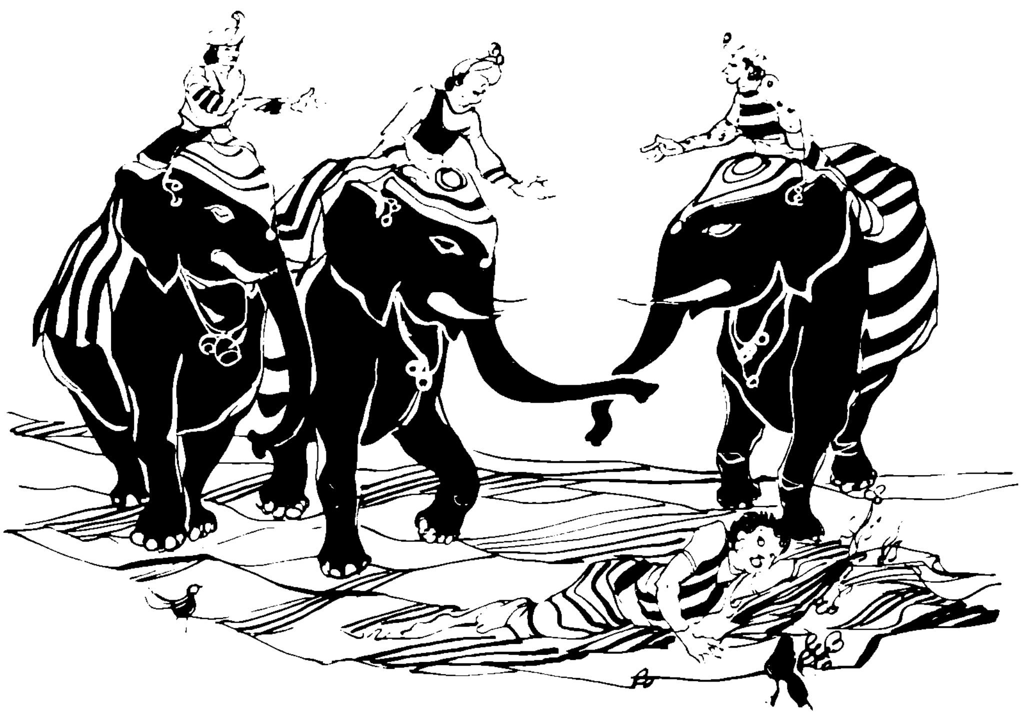
''उधर से निकल जाओ।''

''नहीं, तुम्हें उठना होगा।''

कतन ने कहा—''नहीं, जाना हो जाओ, नहीं तो लौट जाओ। बहस क्यों करते हो?''

बूढ़े मंत्री ने कहा—''हमें रास्ता दो।''

''जाने वाले अपना रास्ता खोज लेते हैं। वे इस तरह समय नष्ट नहीं करते।''



तीनों मंत्रियों ने एक-दूसरे की ओर देखा और वे अपने-अपने हाथी से उतर पड़े। उन्होंने इस निडर युवक की बुद्धि की परीक्षा लेने का निश्चय कर लिया। वे उसके पास

आकर बैठ गए। सबसे पहले गृह मंत्री बोला—''मेरे पिताजी ने एक बहुत बड़ा भैंसा पाल रखा था।''

मुख्य मंत्री ने पूछा—''कितना बड़ा था?''

''बहुत बड़ा था। यदि कोई बगुला उसके एक सींग से उड़े तो दूसरे सींग तक पहुंचने में शाम हो जाए। आप खुद सोचिए वह भैंसा कितना बड़ा था,'' गृह मंत्री ने उत्तर दिया।

इस पर रक्षा मंत्री बोला—''मेरे पिताजी ने एक बहुत बड़ा घर बनवाया था।''

''घर कितना बड़ा था?'' गृह मंत्री ने पूछा

''जब सुबह मेरी मां भोजन बना लेती और उस घर की रसोई से पिताजी को बुलाने 'शुमाङ' (आंगन) तक जाती तो दोपहर हो जाती थी और उन दोनों को रसोई घर तक पहुंचने में शाम हो जाती थी। इससे आप ही अंदाज लगाइए कि घर कितना बड़ा था।'' कहकर रक्षा मंत्री चुप हो गया। कतन इनकी बातें ध्यान से सुन रहा था।

अब मुख्य मंत्री की बारी थी। वह बोला—''मेरे पिताजी ने बहुत बड़ा वृक्ष लगाया था।''

गृह मंत्री ने पूछा—''वृक्ष कितना बड़ा था?''

''यदि कोई मनुष्य उस वृक्ष की दौड़कर परिक्रमा करता तो उसको सुबह से शाम हो जाती। तुम स्वयं अनुमान लगाओ कि वह वृक्ष कितना विशाल था,'' मुख्य मंत्री ने उत्तर दिया।

यह सुनकर कतन से नहीं रहा गया। वह बोला—''मेरे पिताजी ने बहुत बड़ी ढोलक बनवाई थी।''

गृह मंत्री ने कतन से पूछा—''ढोलक कितनी बड़ी थी।''

''ढोलक के एक भाग पर थाप मारकर एक आदमी जब दौड़कर दूसरे भाग तक पहुंचता तो उसको पूरा एक दिन लगता था। अब आप अंदाज लगाइए कि ढोलक कितनी बड़ी थी,'' कतन ने उत्तर दिया।

मुख्य मंत्री ने कहा—''यह कैसे हो सकता है? इतनी बड़ी ढोलक के लिए वह लकड़ी कहां से लाए होंगें?''

कतन बोला—''आपके पिताजी ने जो विशाल वृक्ष लगाया था उसी से उन्होंने वह ढोलक बनवाई थी।''

गृह मंत्री बोला–"मगर उसको मढ़ने के लिए इतना बड़ा चमड़ा कहां से आया?"

कतन ने तुरंत जवाब दिया–"वह ढोलक आपके पिताजी के द्वारा पाले गए भैंसे की खाल से मढ़ी गई थी।"

रक्षा मंत्री ने आखिरी सवाल किया–"वह ढोलक कहां है? हमें दिखाओ।"

"आप उस ढोलक को अपने पिताजी के द्वारा बनवाए घर में देख सकते हैं।"

तीनों मंत्री चुप हो गए। उन्हें जिस व्यक्ति की तलाश थी वह मिल गया था। वे कतन को लेकर राजधानी की ओर चल पड़े।

घमंडी मछली

मणिपुर के हर घर के आंगन में जलाशय होते हैं, जिन्हें पुखरी (पोखरी) कहा जाता है। घरों के अलावा भी हर गांव व बस्ती में बड़ी-बड़ी पोखरियां होती हैं। एक गांव की पोखरी में सींगवाली घमंडी टेंगना जाति की एक मछली रहती थी। पोखरी की दूसरी किस्म की मछलियों से टेंगना बड़ी और मोटी थी। दूसरी मछलियां टेंगना के सींगों से डरती थीं। वे उसका आदर करती थीं और आज्ञा भी मानती थीं। पोखरी की मछलियों पर टेंगना शासन करती थी। घमंडी टेंगना अपने सींग उठाए पोखरी में घूमती रहती थी।

बरसात के दिन बीत गए। जाड़े के दिनों में पोखरी का पानी घटने लगा। ज्यों-ज्यों पानी घट रहा था, मछलियों की चिंता बढ़ रही थी। सभी मछलियां टेंगना से जाकर बोलीं—"हे टेंगना रानी! पोखरी का पानी सूखता जा रहा है। क्या किया जाए?"

"किसी तरह की चिंता मत करो। मेरे होते हुए तुम्हें डरने की कोई आवश्यकता नहीं है।" इतना कहकर वह मस्ती से सींग उठाए तैरते हुए चली गई। मछलियों को संतोष तो नहीं हुआ मगर टेंगना से कुछ कहने का साहस भी उनमें नहीं था।

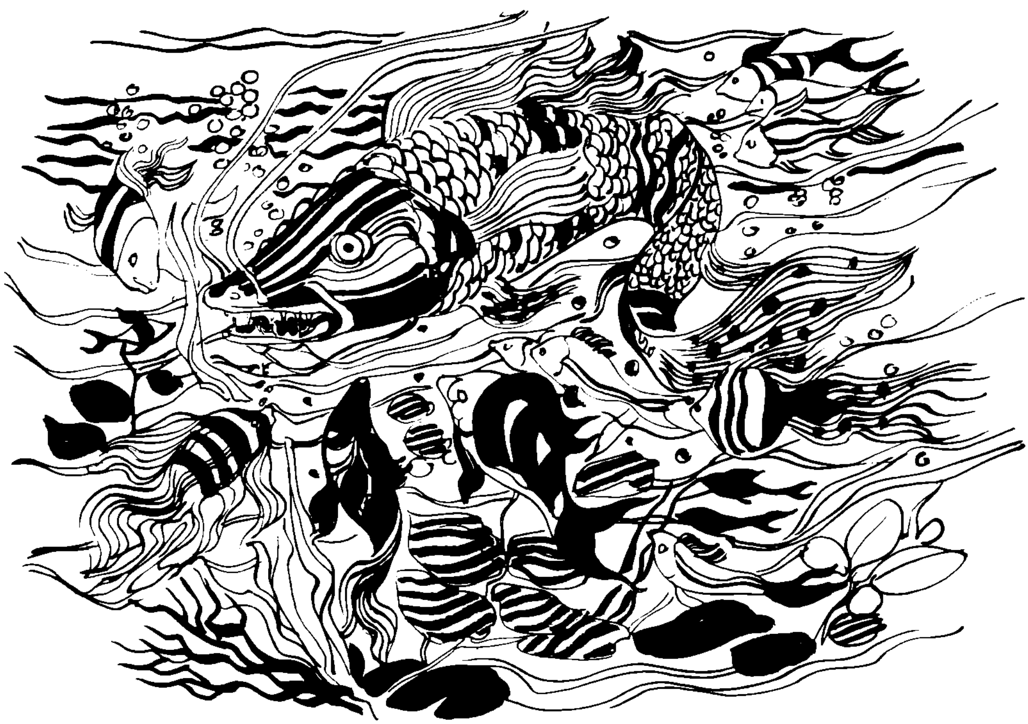
एक दिन बुद्धिमान उकाबी जाति की मछली टेंगना के पास गई। उसे प्रणाम करके नम्रता से कहा—"इस पोखरी का पानी सूखता जा रहा है। यदि आपकी आज्ञा हो तो हम सब किसी बड़ी पोखरी में चलें।"

टेंगना फिर घमंड से हंस दी और बोली—"मेरे होते हुए तुम्हें चिंता करने की जरूरत नहीं।" इतना कहकर वह सींग उठाकर चल पड़ी। बेचारी उकाबी कुछ कह नहीं सकी। वह चिंता के साथ टेंगना को जाते हुए देखती रही।

छोटी-छोटी मछलियां रोज टेंगना से प्रार्थना करतीं परंतु टेंगना घमंड के मारे रोज ही वही उत्तर देती—"मेरे होते हुए तुम्हें चिंता करने की जरूरत नहीं।" छोटी मछलियां टेंगना से भयभीत थीं। वे उससे डर के मारे कुछ कह नहीं सकती थीं। इधर पोखरी का पानी घटता जा रहा था। उधर मछलियों की चिंता बढ़ती जा रही थी।

मणिपुर में मछली की गिनती शाकाहारी भोजन में होती है। एक समय के भोजन में कई तरह की मछलियां पकाई जाती हैं। चटनी, सब्जी और दाल में भी डाली जाती हैं। मछली भोजन में नमक के समान जरूरी है, इसलिए बच्चे से बूढ़े तक मछली

पकड़ने में रुचि लेते हैं। लड़कियां व स्त्रियां भी खाली समय में मछली पकड़ती हैं। कम उम्र के बच्चों के लिए गहरे जल में मछली पकड़ना मुश्किल होता है। इसलिए वे पानी का स्तर घटने पर मछली पकड़ने निकल पड़ते हैं। ये बच्चे दल बनाकर निकलते हैं। तोम्बा भी अपने साथियों का दल बनाकर मछली पकड़ने चल पड़ा। तोम्बा का दल ऐसी पोखरी की तलाश में था जिसमें पानी बहुत कम हो। चलते-चलते यह दल उसी पोखरी के किनारे जा पहुंचा जिसमें टेंगना रहती थी।



पोखरी के किनारे पहुंचकर बच्चों ने अनुमान लगाया कि पानी बहुत गंदला है। इसमें खूब मछलियां होनी चाहिएं। जो हमारे आने से शांत हो गई हैं। तोम्बा ने कहा—''पहले पानी को उलीचना होगा।''

याइमा बोला—''देर किस बात की है। आओ, पानी में उतरें और उलीचना शुरू करें।''

लड़कों ने अपनी-अपनी धोती को घुटनों के ऊपर तक कर लिया। अपना-अपना ओलचा लेकर पोखरी में उतर कर पानी उलीचने लगे। पानी में मछलियां सांस रोके बच्चों की बातें सुन रही थीं। वे सब टेंगना के पास पहुंचीं और बोलीं—''हे टेंगना रानी! अब तो मुसीबत सिर पर आ गई है। हमें बचाने का उपाय कीजिए।''

टेंगना भी घबराई हुई थी। मगर घबराहट को छिपाते हुए उसने फिर घमंड के साथ कहा—''डरो मत। मेरे रहते डरने की कोई बात नहीं। मैं तुम्हारी रक्षा करूंगी,'' कहकर सींग उठाए चल दी।

पोखरी की सारी मछलियां भय से कांप रही थीं। डूबते को तिनके का सहारा। उन्होंने सोचा टेंगना शायद हमारी रक्षा करेगी। उकाबी सभी मछलियों को टेंगना की बात मानने के लिए कोस रही थी। इधर लड़के पानी उलीचे जा रहे थे। मूर्ख मछलियां पानी के अभाव में कीचड़ में तड़प-तड़प कर मर रही थीं। लड़के उन्हें अपनी-अपनी कमर से बंधी टोकरी में भर रहे थे। टेंगना भी पकड़ी गई। उसके घमंड की कीमत सभी मछलियों को प्राण देकर चुकानी पड़ी।

मुंगरी का वरदान

मणिपुर के चिगाम्बम वंश में मोचा नामक एक बढ़ई था। उसके सात बच्चे थे। ज्यादा बच्चे होने के कारण घर की हालत बहुत तंग थी। उसे काम भी बहुत कम मिल रहा था। बाप-दादा बढ़ई का ही काम करते थे। खेती-बाड़ी थी नहीं, इसीलिए उसे भी गुजारे के लिए यही काम करना पड़ता था। बढ़ई की पत्नी भी दिन-रात मेहनत करती थी। इतना करने के बावजूद गुजारा मुश्किल से ही हो पाता था।

बढ़ई मोचा सवेरे ही अपने औजार लेकर घर से निकल जाता। कभी काम मिलता तो कुछ पैसे-धेले घर ले आता, वरना शाम को खाली हाथ घर लौटता था। जिस दिन काम नहीं मिलता था, उस दिन भी वह इधर-उधर भटकता रहता था। मगर पूरे दिन वह घर लौटकर नहीं आता था, क्योंकि घर में सातों बच्चे उससे तरह-तरह की फरमाइशें करते। वे आपस में लड़ते-झगड़ते रहते थे। शाम को जब वह घर लौटता, तो सातों बच्चे दौड़ कर उसे घेर लेते। वे एक ही आवाज में—''कबोक (चावल के लावे व गुड़ से बने लड्डू) दो, हमें कबोक दो,'' चिल्लाने लगते थे। जिस दिन उसे काम मिलता, वह बच्चों के लिए कबोक लाना नहीं भूलता था। मगर जिस दिन काम नहीं मिलता था, कबोक कहां से लाता? बस, किसी तरह उन्हें बहलाता। बच्चे चिल्लाकर कबोक मांगते, तो वह बहुत दुखी हो जाता था। खीझकर उन्हें चुप कराने के लिए डांटता भी था।

वह रात-दिन गरीबी दूर करने के बारे में सोचा करता। उसे बचपन में सुनी कहानियां याद आतीं, जिनमें किसी निर्धन को हीरे-मोती मिल गए थे या कोई जादू की छड़ी, जिससे वह तुरंत धनी बन गया। वह भी कोई ऐसी जादू की चीज पाने के सपने देखा करता।

एक दिन उसने अपने साथी से सुना, पास की बस्ती में एक बूढ़ा किसान रहता है। पहले वह भी बहुत गरीब था, मगर उसे कहीं से एक जादुई मुंगरी मिल गई, जिससे वह धनी हो गया। बूढ़ा अब अकेला है। जादुई मुंगरी भी उसके पास है।

मोचा ने सोचा—बूढ़े से मिलना चाहिए। भाग्य की परीक्षा लेनी चाहिए। यह सोचकर वह बूढ़े के घर गया। बूढ़े के पास अक्सर कोई आता नहीं था। मोचा के आने पर उसे बहुत खुशी हुई। बूढ़े ने उससे कहा—''कभी-कभी आया करो।'' सुनकर मोचा

बहुत प्रसन्न हुआ। अब जिस दिन भी उसे काम नहीं मिलता था, वह बूढ़े के साथ ही दिन बिताता। उसकी सेवा करता। दोनों के बीच अच्छे सम्बंध होते जा रहे थे। बूढ़ा मोचा से बहुत प्रसन्न था। मोचा उसके सामने अपनी गरीबी का रोना रोता रहता था। बूढ़े के पास जादुई मुंगरी थी ही। मरने से पहले वह मुंगरी किसी को देना चाहता था। उसने मोचा को इसके लिए ठीक समझा।

बूढ़े ने एक दिन उससे कहा—''मोचा, मैं बहुत बूढ़ा हूं। तुमने मेरी बहुत सेवा की है। मैं तो कभी भी मर सकता हूं। मेरे पास एक जादुई मुंगरी है। मरने से पहले मैं उसे तुम्हें देना चाहता हूं।''



मोचा को इसी दिन की प्रतीक्षा थी। उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। उसने अपनी खुशी को छिपाते हुए बूढ़े से कहा—''बाबा, मैं तो जादू-मंत्र नहीं जानता जादुई मुंगरी लेकर मैं क्या करूंगा?''

बूढ़ा मुस्कराया। उसे समझाते हुए बोला– "देखो बेटा, मैं तुम्हें मुंगरी का रहस्य बताता हूं। इस मुंगरी को लेने के लिए सात दिन तक व्रत रखना होगा। शरीर पर केवल सफेद कपड़े पहनने होंगे। यह व्रत पूर्णिमा के दिन खत्म होना चाहिए। उसी दिन तुम संध्या के समय आना। बिना बोले, मेरे घर के बीच के खम्भे पर झोले में रखी मुंगरी को ले जाना।" इतना कह, बूढ़ा कुछ रुका।

"फिर घर में ले जाकर पूजा -पाठ करके उसे अपने घर के बीच के खम्भे पर टांग देना। इससे जो तुम चाहो मांगना, तुम्हें मिल जाएगा। मगर बेटा, यह कठिन काम है। मुंगरी तुम्हें केवल तीन वरदान ही देगी। एक बार में यह एक वरदान देती है। एक-एक पूर्णिमा को तुम एक-एक करके तीन वरदान मांग सकते हो। ये तीन अवसर तुम्हारे हाथ में हैं। अगर तुमने खो दिए, तो फिर जीवन भर पछताओगे।"

मोचा खुशी-खुशी घर आया। उसने जादुई मुंगरी की सारी कहानी पत्नी व बच्चों को बताई। वे सब अब गरीबी दूर होने के सपने देखने लगे। सभी पूर्णिमा की प्रतीक्षा करने लगे। मोचा ने पूर्णिमा के पहले व्रत रखना शुरू किया।

आखिर पूर्णिमा का दिन आ ही गया। मोचा गया और बूढ़े के घर से मुंगरी अपने घर ले आया। उसे खम्भे पर लटकाने के बाद पूजा-पाठ करने लगा। मगर उसी समय उसके सातों बच्चे वहां इकट्ठा हो गए। वे जोर-जोर से चिल्लाने लगे–"मैं भी..मैं भी मांगूंगा।"

मोचा बच्चों के चिल्लाने से आग-बबूला हो उठा। उसने उन्हें चुप रहने का संकेत किया, पर वे कहां मानने वाले थे? मोचा का क्रोध बढ़ गया। वह बूढ़े की बातों को भूल गया। गुस्से में उसके मुंह से निकल गया–"इनके मुंह से बोल न निकले।"

कहने की देर थी, सभी बच्चों के मुख से बोल बंद हो गए। एक वरदान हाथ से जा चुका था। अब आने वाली पूर्णिमा तक बेचारे बच्चों के मुख के बोल खुलवाने की प्रतीक्षा करनी थी। वह बड़ी मुसीबत में पड़ गया। करे भी तो क्या? गम्भीर समस्या थी।

बोल न पाने के कारण बच्चे उदास रहते थे। राम-राम कर, अगली पूर्णिमा का दिन आ पहुंचा। मोचा ने पूजा-पाठ किया। मुंगरी के सामने हाथ जोड़कर बोला–"हे मुंगरी! मेरे बच्चों के मुख में फिर से बोल आ जाए। मोचा के मुंह से यह निकलते ही बच्चे फिर जोर-जोर से बोलने लगे। अब वे नई-नई फरमाइशें करने लगे। मोचा की समझ में नहीं आ रहा था, किसके लिए क्या मांगे। अब एक आखिरी वरदान बाकी बचा था।

फिर तीसरी पूर्णिमा आई। मोचा ने फिर पूजा-पाठ करके मुंगरी से प्रार्थना की–"हे मुंगरी, बच्चे बोलें तो सही, मगर इन्हें बुद्धि दे, फरमाइश न करें। काम में मेरी सहायता करें।"

चमत्कार हुआ। शैतान बच्चे एकदम भोले बन गए। मोचा ने मुंगरी को खम्भे से उतार कर संदूक में रख दिया। अब वह और उसके बड़े बच्चे जी तोड़ मेहनत करने लगे। तीसरे वरदान के जादू ने उसके भाग्य को बदल दिया।

शेर और तोमचा

प्राचीन काल में यातायात के साधन बहुत कम थे। मणिपुर चारों ओर से पर्वतों से घिरा प्रदेश है, जिसे भारत से इम्फाल-सिलचर और इम्फाल दीमापुर की सड़कें जोड़ती हैं। इन दो के अलावा कोई सड़क नहीं है, जो देश के अन्य भागों से मणिपुर को जोड़ती हो। उन दिनों तोमचा नामक एक युवक दूर-दूर तक मणिपुर से बहुमूल्य वस्तुएं लेकर जाता था और रुपया कमा कर कई महीनों बाद लौटा करता था।

तोमचा लगभग पन्द्रह महीने के बाद माल बेचकर बड़ी खुशी से घर आ रहा था। इस बार की यात्रा में उसे काफी लाभ हुआ था, इसलिए वह बहुत प्रसन्न था। वह जल्दी-से-जल्दी घर पहुंचना चाहता था। एक के बाद एक पर्वत व घाटियां पार करता हुआ वह तेज कदमों से अपने नगर मोइराङ की ओर बढ़ रहा था। एक रात उसने गांव में नागा जाति के मुखिया के यहां आश्रय लिया और बड़े सवेरे अपने घर की ओर चल पड़ा।

प्रातः काल का सूरज नोङमाइजिङ पर्वत के पीछे से अपना लाल मुंह दिखा रहा था। पूर्व दिशा के आकाश में मानो किसी ने कुमकुम रोली बिखरा दी हो। सारा आकाश लाल था। बसंत ऋतु की मस्त हवा चल रही थी और वह अपने परिवार के लोगों से मिलने के सपने संजोए आगे बढ़ रहा था। उसके कंधे पर भारी गठरी थी, जिसमें स्वर्ण मुद्राएं व कुछ जरूरी सामान था। घने जंगल और घनी पक्षियों की चहचहाहट सुनाई दे रही थी। कहीं कठफोड़वा पेड़ में छेद कर रहा था तो उसकी चोंच की ठक-ठक सुनाई दे रही थी, तो कहीं झींगुरों की ध्वनि। पेड़ों की डालियों पर बुलबुल और मैना फुदक रही थीं, तो कहीं कोयल की कूक सुनाई दे रही थी। वह सूरज ढलने से पूर्व इस पर्वत को पार करके विशनपुर गांव तक पहुंच जाना चाहता था।

वह दोपहर तक चलता रहा। एक झरने के किनारे रुका। उसने कंधे से गठरी उतारी और कमर से खुखरी (कृपाण) निकाल कर एक तरफ रखी। वहां नहाया-धोया और उसके बाद वह बांस काटने लगा। उसने बांस का एक पौर काटा और उससे गिलासनुमा नलकी तैयार की। बांस काटने में उसके हाथ में चोट लग गई जिसमें से खून बह निकला। अतः उसने उची सूम्बल (एक प्रकार का पौधा) के पत्ते तोड़े और उन्हें हाथ से मलकर अपने घाव पर लगा दिए। खून का बहना रुक गया। तब उसने झरने से

बांस की नलकी में पानी भरा और एक समतल जगह पर बैठा। गठरी खोलकर उसमें से गुड़-चिवड़ा निकाला और बैठकर खाया। पानी पीकर उसने अपनी गठरी उठाई और फिर चल पड़ा।

अब वह पहाड़ी की चोटी पर पहुंच चुका था। नीचे घाटी दिखाई दे रही थी। मन ही मन उसे विश्वास हो गया था कि अब आगे ढलान है और वह संध्या से पूर्व विशनपुर गांव पहुंच सकेगा, जहां उसकी मौसी है। वह अभी कुछ ही दूर चला था कि पगडंडी के पास ही एक विशालकाय शेर बैठा दिखाई दिया, किन्तु शेर हिल-डुल नहीं रहा था। भय के कारण उसे पसीना छूटने लगा, वह कांप उठा। उसका हाथ अचानक खुखरी पर चला गया। कुछ निर्णय लेने से पूर्व उसने इधर-उधर देखा तो शेर से लगभग एक सौ गज की दूरी पर उसे एक बड़ा जंगली सूअर खड़ा दिखाई दिया।



बनैले सूअर के मुंह पर हाथी जैसे पैने दो दांत थे। शेर और सूअर की आंखें एक-दूसरे पर गड़ी हुई थीं। उसे यह समझने में देर न लगी कि शेर क्यों स्थिर होकर बैठा है। उसे बचपन में सुनी गई शेर व सूअर की कहानियां याद आ गईं। उसे याद आया कि दोनों में से जो पहले हमला करता है, वही जीतता है। पहले हमले के लिए किसी एक का ध्यान दूसरी ओर जाना जरूरी है। सूअर बच गया तो अपने पैने दांतों से मेरी टांगें तोड़ देगा और मेरे गिरने पर उन्हीं से मेरा पेट फाड़कर मार डालेगा, इसलिए उसने शेर की सहायता करने का निश्चय किया।

तोमचा ने एक बड़ा-सा पत्थर उठाया और पूरे वेग से सूअर के सिर पर दे मारा। सूअर पत्थर की चोट से तिलमिला उठा और इससे पहले कि वह स्थिति को समझे शेर उस पर टूट पड़ा। शेर ने सूअर पर पंजे का भरपूर वार किया। सूअर चीखता-चिल्लाता पास के खड्ड में गिर पड़ा। शेर भी उसके पीछे लपका। तोमचा संकट टला जानकर तेजी से चल पड़ा।

कुछ दूरी पर उसे खून से लथपथ कोई चीज पगडंडी के बीच पड़ी दिखाई दी। वह घबराया, परंतु निकट जाकर देखने पर ज्ञात हुआ कि यह सूअर का सिर था। वह उसकी बगल से आगे बढ़ गया।

कुछ ही दूर चला कि वह खोपड़ी फिर उसे आगे रास्ते में पड़ी दिखाई दी। उसके आश्चर्य का ठिकाना न था। वह सोच ही रहा था कि खोपड़ी यहां कैसे पहुंची कि उसे पास की झाड़ियों में सरसराहट सुनाई दी। उसने दाहिने मुड़ कर देखा तो शेर बैठा था। उसकी आंखों में कृतज्ञता का भाव था और वह बैठा अपनी जीभ से अपने ही मुंह को चाट रहा था। मानो वह अपने प्रति किए गए उपकार का बदला चुकाना चाहता हो। तोमचा ने परिस्थिति को समझा और शेर की ओर मुड़ कर बोला—"महाशय! मैं मनुष्य हूं। यह मेरा खाद्य नहीं। आप ही इसका भोग लगाइए।" कहकर उसने शेर से विदा ली। किन्तु यह क्या शेर कभी आगे तो कभी उसके पीछे चलता रहा और उसने तोमचा को विशनपुर तक पहुंचाया। विशनपुर गांव आने पर शेर लौट गया। उसने उपकार का बदला चुका दिया। पशुओं में भी बुद्धि होती है। वे भी उपकार का बदला चुकाना जानते हैं।

प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार

